आर. एन. आई. रजि. नं. यू. पी. एच. आई. एन-2000/1679 मूल्य 20/- रुपये एस. एस पी/एल. डब्लू/एन. पी-372/2017-19
हास्य व्यंग्य की अनूठी पत्रिका ISSN 2395-4976

अब अट्टहास इंटरनेट पर भी उपलब्ध www.writeconnectindia.com/ www.attahas.page

# अट्टहास

हास्य-व्यंग्य

व्यंग्यकार
डॉ. कीर्ति काले

दिसम्बर 2019

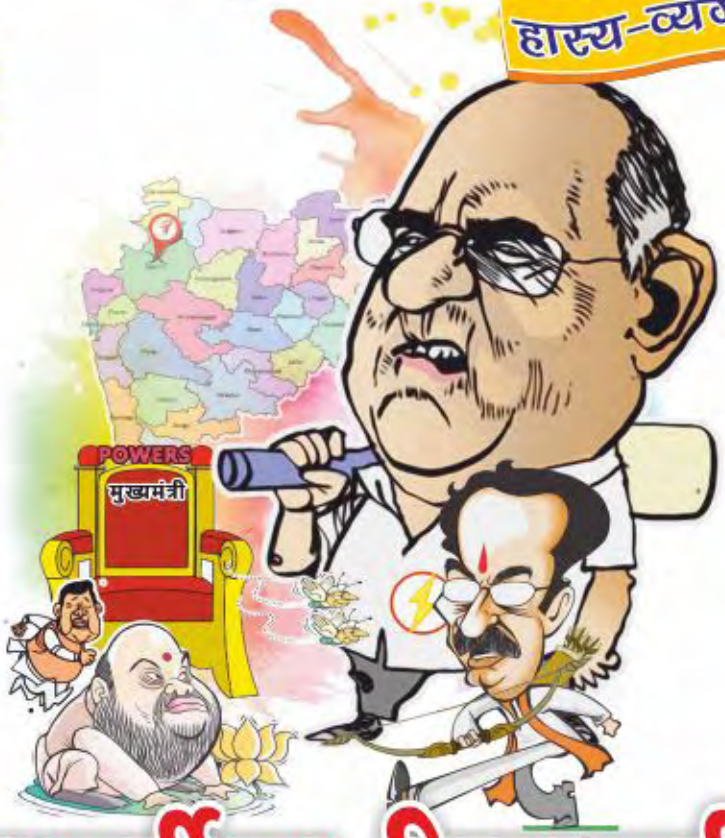


## किस्सा कुर्सी का : हिस्सा कुर्सी का

-आभा सिंह

**व्यंग्यकार सर्वश्री** सुरेश कांत, अरविंद तिवारी, सुभाष चन्दर, विप्लव वर्मा, राजेन्द्र वर्मा, आलोक पुराणिक, शांति लाल जैन, विजयानन्द विजय, सन्तराम पांडे, ब्रजेश कानूनगो, उमाशंकर 'मनमौजी', राम स्वरूप दीक्षित, विनोद पांडे, संजीव जायसवाल संजय, शबाहत हुसैन विजेता, दीपक गिरकर, महेश दुबे, मुकेश नेमा, डॉ. कीर्ति काले, अंजू निगम, तेजनारायण शर्मा बेचैन, अनुराग मिश्र 'गैर', डॉ. कुसुम जोशी, वीना सिंह, वीरेंद्र नारायण झा, एकता एस दुबे, आशीष तिवारी 'निर्मल', विनोद कुमार विक्की, मोनिका अग्रवाल, आभा सिंह, ऋचा माथुर, अभिषेक राज शर्मा, डॉ. सुषमा 'सौम्या', टीका राम साहू, राम किशोर उपाध्याय, अनूप श्रीवास्तव आदि।

छँटे हुए रचनाकारों की छँटी हुई रचनाएं

हास्य व्यंग्य की अनूठी पत्रिका

# अट्टहास

9, गुलिस्तां कॉलोनी
लखनऊ– 226001
मोबाइल– 09335276946

---

तनाव मत पालिए हंसने के पल निकालिए

बुक स्टॉल पर जाइए और तुरंत ले आइए.....

प्रेषक.....

.....

.....

हास्य–व्यंग्य की अनूठी पत्रिका

वर्ष–20/2019 अंक–8, दिसम्बर 2019

R.N.I.Reg. No.U P H I N- 2000/1679
ISSN NO- 2395-4957
मूल्य 20/-

# अट्टहास®

## हास्य व्यंग्य

हास्य तरंगों से रंगे, जन जीवन के अंग।
जुड़िये मन से आप भी, अट्टहास के संग

| | |
|---|---|
| प्रधान संपादक | अनूप श्रीवास्तव |
| संपादक | शिल्पा श्रीवास्तव |
| कार्यकारी संपादक | रामकिशोर उपाध्याय |
| सम्पादकीय प्रभारी | कृष्णा |
| उपसंपादक | समीना खान |

सम्पादकीय
अभिषेक, पवन गौतम, देवांशी, अविका

| | |
|---|---|
| संयोजन | जितेन्द्र कुमार |
| रेखांकन | विश्वम कृष्णा माधव |
| वित्तीय सलाहकार | अरुण कुमार |
| विधि सलाहकार | अभय कुमार |

संपादकीय कार्यालय
10, गुलिस्तां कॉलोनी, लखनऊ–226001
ईमेल : anupsrivastavalko@gmail.com
मोबाइल नंबर– 09335276946
दिल्ली कार्यालय: 20, चेतना अपार्टमेन्ट,
प्लाट नं0–6, आई.पी. एक्सटेंशन,
मदर डेयरी के पास, पटपड़गंज, दिल्ली
मोबाइल– 09911906377

### ब्यूरो प्रमुख

**कर्नाटक : अभिषेक श्रीवास्तव**
मोबाइल– 08867085656
**मध्यप्रदेश : अरुण अर्णव खरे**
डी 1/35 दानिश नगर, होशंगाबाद रोड
भोपाल–462026 मो.– 09893007744
**अहमदाबाद : नवीन प्रधान**
सी–402 विराज विहार, 4 जोधुपर सैटेलाइट
अहमदाबाद 380015
**जयपुर : लक्ष्मी अशोक**
शिल्पायन, 3/6, एस एफ एस
अग्रवाल फार्म मानसरोवर जयपुर
मोबाइल–09467425258
**रायपुर : यशवंत पुरोहित**
कैलाश भवन, शिवमंदिर रोड,
रायपुर 492001, मो.–09425207911
**पूना : अशोक कुमार**
मकान नं–503, बिल्डिंग–एस–7 सन
पेराइाइज, आनंद नगर, सिंहगढ़रोड–पूना
**बिहार : राजेश मंझवेकर**
मां–बाबा सदन, तरौनिया एरिया,
मंझवे, नवादा (बिहार)
मो: 9334988252/ 8709748970
**देहरादून : डॉ बुद्धिनाथ मिश्र**
देवघा हाउस, स्ट्रीट–5 बसंत बिहार,
इन्क्लेव– 248 मो.– 9412992244
**शिमला : सुदर्शन वशिष्ठ**
अभिनंदन, कृष्ण नगर, लोअर पंथा घाटी,
शिमला मो.– 9450114576

## स्थायी स्तम्भ

संपादकीय–अट्टहास व्यंग्य की रिजॉर्ट नही–रामकिशोर उपाध्याय, कार्यकारी संपादक–4, मौसमी रंगत–विप्लव वर्मा–20, मनमौजी की मौज–उमाशंकर मनमौजी–34, कुण्डलियां–डा. सुषमा सैम्या–38, व्यंग्यकारों को जन्मदिन की बधाई–22, अट्टहास टाइम्स–अपने व्यंग्यकारों को जानिए–सुरेश कांत –30

## अनुक्रम

### व्यंग्य

झींकते झींकूलाल–वीना सिंह–5, गिरगिट के भी बाप है–डॉ कीर्ति काले–6,मंच है टंच–डॉ. कीर्ति काले–8, किस्सा कुर्सी का : हिस्सा कुर्सी का–आभा सिंह–10, दो नम्बर के धंधे में एक नम्बर की जबान–अनूप श्रीवास्तव–12, आर्थिक मंदी का ठीकरा–दीपक गिरकर–13, बखिया उधेड़ने की कला–ब्रजेश कानूनगो–15, महाकवि की खीझ–राजेन्द्र वर्मा–16, खेत नहीं फेस–बुक लाइक–आलोक पुराणिक–18, आखरी उम्मीद पर आरे–शबाहत हुसैन विजेता–19, सी.डी. पर प्रतिबंध–संजीव जायसवाल 'संजय'–21, शरीफ होने का ठप्पा–मुकेश नेमा–24, परसाई साहब –अभिषेक राज शर्मा–25, भैंस सहित खोया–अरविंद तिवारी–26, तालियाँ बजाते रहिये–विजयानंद विजय–28, कड़ाही में जाने को आतुर जलेबियाँ–रामस्वरूप दीक्षित–33, हुजूर, कविता की चिड़िया बीमार है क्या?–सुभाष चंदर–35, गाली देना हो तो बुद्धिजीवी कह दें–शांतिलाल जैन–37, बहत्तर हूर की चाह में–विनोद कुमार विक्की–39, ऐप ये कमाल–मोनिका अग्रवाल–41, अमीरी की रेखा–संतराम पाण्डेय–43, आग पुराण–एकता एस. दुबे–45, शुक्लाइन का फेसबुकी प्रेम–आशीष तिवारी निर्मल–47, फेयर एंड लवली होय तो काला बचे न कोय–विनोद पाण्डेय–48, सरकार निर्माण फैक्टरी–टीकाराम साहू 'आजाद'–50, उपहार का झूला–कुसुम जोशी–51, अतिक्रमण रोग–वीरेंद्र नारायण झा–52, व्यंग्यकार को तात्कालिकता से बचना चाहिए–रामकिशोर उपाध्याय–54

### व्यंग्य कवितायें

शब्द बोलता है, अपने परों को–अंजू निगम–7, गाँधी जयंती थाने में– तेजनारायण शर्मा 'बेचैन–23 थाने में रपट लिखाई–महेश दुबे–27, गौरैया–चा माथुर–29, मिली–जुली हुई आबादियों में रहते हैं– जहीर कुरेशी–32, गाँव का जब से शहरीकरण हो गया–अनुराग मिश्र गैर–40, हे निर्भया ! एक और निर्भया–माया देवांगन–44, आजकल का मौसम–सन्तराम पाण्डेय–46

'अट्टहास' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। विवादस्पद मामले लखनऊ न्यायालय के अधीन होंगे। संपादन और संचालन पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक शिल्पा श्रीवास्तव द्वारा प्रिन्ट आर्ट कैन्ट रोड, लखनऊ से मुद्रित तथा 10, गुलिस्तां कालोनी, लखनऊ उ0प्र0 से प्रकाशित।

**संपादकीय**

रामकिशोर उपाध्याय
कार्यकारी संपादक


# अट्टहास व्यंग्य की रिजॉर्ट नही

एक बार अपने दारागंज निवास में बच्चों से घिरे महाकवि निराला जी स्लेट पर संस्कृत के एक ही छंद को बार बार लिखकर मिटा रहे थे। यह देखकर एक बच्चे से नही रहा गया। वह निराला जी का हाथ पकड़ कर बोला –बाबा! यह क्या कर रहे हैं ? एक ही बात को बार बार लिख कर मिटा रहे हैं ? सुनकर निराला जी मुस्कराए–समझे नहीं ! इसे खा रहा हूँ। पचा रहा हूँ ! इस टिप्पणी का गूढ़ार्थ स्पष्ट है। व्यंग्य किसी घटना का मात्र इंस्टेंट रिएक्शन नहीं होता। साहित्य चाहे किसी विधा में हो। रस और लय के साथ अपने सरोकार से बाहर नही हो सकता। अपनी जमीन और तमीज से अलग नहीं हो सकता। व्यंग्य भी अपने सरोकारों से बंधा हुआ है। व्यंग्य का अपना गणितेय प्रमेय है। यह जंतरमंतर की अभेद्य विधा है। उसके शैलीगत संस्कार हैं। धारदार शब्दों से अर्थ की प्रत्युत्पन्नमति परिवेश ही व्यंग्य का कलेवर बनाता है। समाजिक सरोकार के दायरे में बने रहकर ही धारदार व्यंजना से अपनी उपस्थिति को दर्शाता है।

पहले व्यंग्य हास्य के पाए की तरह दिखता था लेकिन हास्य के स्वछन्द होने से जब हास्यास्पद होने का खतरा आ खड़ा हुआ तो व्यंग्य को परिष्कृत हास्य के रूप में स्वीकार होने लगा और कालांतर में साहित्य की सभी विधाओं ने उसे मुक्त कंठ से स्वीकार किया। लेकिन अब यही खतरा दूसरे रूप में व्यंग्य के सामने भी चुनौती बन रहा है। इससे बचना ही होगा। आज व्यंग्य के छोटे छोटे स्वर विभिन्न साहित्यिक विधाओं और शिविरों में बज रहे हैं। कभी कभी तो लगता है कि उनकी ध्वनि आपस मे विरोधी है, टकरा रही है। वक्त की जरूरत है विभिन्न विधाओं में व्यंग्य की जो रचना हो रही है, छोटी छोटी जगहों पर जो महत्वपूर्ण व्यंग्य लिखा जा रहा है उन सबको एक मंच पर लाया जाए। उनमें आपसी संवाद कायम हो और यह संवाद आगे बढ़कर सबको जोड़ते हुए व्यंग के महाराग में ढल सके। इसकी कोशिश करने की जरूरत है। यह तो निर्विवाद है कि यह दौर जितना जटिल है आगे बढ़कर और भी जटिल होता जा रहा है, उसमे व्यंग्य का कोई विकल्प नहीं है। पर व्यंग्य को हम अखबारी टिप्पणियों मंचो तक ही नहीं समेट सकते। व्यंग्य का दायरा बढ़ाना होगा और सभी विधाओं में व्यंग्य के तेवर को विस्तार देना होगा। यही नही हमें अपने व्यंग्य लेखन में तात्कालिकता का मोह छोड़ना होगा।

यंग्य लेखन कोई मजबूरी नहीं है। लिख तो कोई भी सकता है। लेकिन अच्छे और सशक्त और सटीक व्यंग्य लेखन के पीछे लेखकीय ईमानदारी है। आज देश के तथकथित कर्णधारों, कतिपय सिरफिरों की किरकिरी ने देश की कमर तोड़ दी है और वह पेट के बल पर सरक सरक कर, दरक दरक कर टूट बिखर कर सत्ता के गलियारों में अपनी पहचान खोज रहा है। लेकिन सत्ता का कोई चरित्र नहीं होता। वह सिर्फ अपनी सुनती है। उस पर व्यंग्य के बाण तो बरसाए ही जा सकते हैं। अट्टहास हास्य व्यंग्य मासिक ने अपने बीस वर्षों की निर्बाध प्रकाशन यात्रा में अपने उत्तरदायित्व को निभाने की कोशिश की है। भले ही व्यंग्य के क्षेत्र में यह गिलहरी प्रयास ही सही। अट्टहास व्यंग्य के सिपहसलारों के समक्ष विनत है। हम जानते हैं कि अट्टहास व्यंग्य की रिजॉर्ट नहीं है। लेकिन नए रचनाकारों के लिए यह पत्रिका व्यंग्य की नर्सरी बनी रहे यही हमारा अभीष्ट है। ■




फ्लैट नं. 10, इंद्रप्रस्थ अपार्टमेंट्स, पॉकेट 3, सेक्टर–12,
द्वारका, नई दिल्ली–110078 (निकट मीडियोर हॉस्पिटल)
ईमेल–upadhyay.ramkishore@gmail.com
मोबाइलः 9354174664

वीना सिंह

# झींकते झींकूलाल

झींकना एक कला है। एक कसरत है। मन को दुरुस्त रखने का एक जरिया है। जो झींकते हैं उनके अनुसार हर किसी के बस का है ही नहीं झींकना। जो झींकता है वह देश दुनिया के हालात की खबर भी रखता है।

क्या करें कुछ भी उनके मन का नहीं होता। चाहते कुछ और हैं होता कुछ और है। जब कुछ मन का नहीं होता तो मन झींकता ही है, सो वे दिन–रात झींकते रहते हैं। कभी इस बात पे तो कभी उस बात पे। कभी यहां तो कभी वहां। कभी खुलकर झींकते हैं तो कभी अन्दर ही अन्दर। वे कहीं भी किसी से संतुष्ट नहीं होते। हमेंशा उथल–पुथल में ही दिखते है। अब देश की राजनीतिक पार्टियों को ही ले लीजिए, न वे इस पार्टी से संतुष्ट न उस पार्टी से। इसे जिताएं कि उसे, वे झींक रहे हैं। जो पार्टी जीत जाती है उससे पूरे पांच साल के लिए झींकना फिक्स हो जाता है। झींकते तो वे हारी हुई पार्टी से भी है।

उनके झींकने से सभी वाकिब हैं सो घर बाहर कोई भी उनके झींकने को तवज्जो नहीं देते हैं, इस बात पर वे और ज्यादा झींकते है। होटल में खाना खाने जाते हैं तो खाना उठा–उठाकर पटकते हैं कि यह खाना बेकार है, बिल्कुल घर जैसा नहीं है। घर में जीमने बैठते हैं तो पत्नी पर झींकते हैं कि कम से कम खाना बनाना तो सीख लिया होता, यह बिल्कुल होटल जैसा नहीं हैं। यह खाना तो एकदम सादा है बिना चमक–दमक का, बिल्कुल तेरी शक्ल जैसा। ऐसे झींकूलाल बहुतायत में हैं। जो अपना और दूसरों का जीना दुश्वार किये रहते हैं।

इससे तो झक्की इंसान अच्छा, कम से कम दूसरों को ही झिलाता है, पर यह झींकता इंसान तो खुद को ही पतला कर ड़ालता है। किसी न किसी बात पर कुनमुनाता ही रहता है। कल वे चाय की दुकान पर हाथ में चाय का प्याला पकड़े झींक रहे थे, बताओ यह भी कोई चाय है बिल्कुल देश की व्यवस्था की तरह ठंड़ी और अलसायी सी। इससे भला किसी को क्या ताजगी आयेगी जब खुद ही सुस्त पड़ी है। बेचारा चाय वाला देश के बिगड़े हालात के लिए अपनी चाय को जिम्मेदार मान चुप्पी साध गया। वे झींकते हुए पान की दुकान की ओर बढ़ गये। पान मुंह में दबाकर उन्होंने जोर का मुंह बिदकाया, ऐसा लगा कि कत्था चूना सुपाडी किसमिस इलाइची की जगह कीड़े–मकोड़े चबा रहे हों। थू थू थूकर बोले सब गोबर। माथा पीटकर बोले, हमारे देश की सभ्यता संस्कृति, आचार–विचार तो गोबर जैसे भद्दे हो ही गये हैं। मुआं पान का स्वाद भी गोबर जैसा हो गया है। वे झींक ही रहे थे कि एक नौजवान अनमने मन से पकौड़ा तलते दिखा तो वे झट से ब्रेडपकौडे की दुकान पर पहुंचे और चखते ही लगे बड़बड़ाने, यह भी कोई पकौड़े हैं न तो सिके ही कुरकुरे हैं न चटचटे ही हैं। सरकार एक बढ़िया रोजगार तुम्हारे लिए ढूंढ़ कर लायी, और तुम हो कि उसमें भी फिसड्डी निकल रहे हो। क्या होगा तुम युवाओं का? झींकते हुए वे मुंह का स्वाद ठीक करने के लिए गोलगप्पे के खोमचे की ओर बढ़े बढ़ गये, अब पता नहीं गोलगप्पे वाले पर कितना झींकेंगे ?■

38 महाराजा अग्रसेन नगर, भरत नगर सामने–
एल डोरेडो स्कूल, सीतापुर रोड, लखनऊ– 226020

डॉ कीर्ति काले

# गिरगिट के भी बाप है

एक टीवी चैनल पर जोरदार बहस चल रही थी। एंकर जरूरत से ज़्यादा आक्रोशित होकर गले की समस्त छोटी बड़ी नसों को प्रमोशन की चाहत और टीआरपी बढ़ाने की भरसक कोशिश के अनुपात में तानती हुई हड़कम्प मचाने का सीन क्रिएट कर रही थी। विपक्षी दल के नेता भी खाली बादलों की तरह जोर जोर से गरज रहे थे।

किसी प्रदेश के मुख्यमंत्री को क्या यह शोभा देता है?

आज मैं आपके चैनल के माध्यम से देश की जनता से कहना चाहता हूँ कि इनका मुख्यमंत्री पद पर बने रहना लोकतंत्र के लिए बहुत बड़ा खतरा है।

इस घटना के बाद तो इन्हें नैतिकता के आधार पर पार्टी से इस्तीफा दे देना चाहिए। लेकिन नैतिकता हो तब न?

इस्तीफा नहीं दिया तो जनता जनार्दन स्वयं इन्हें कुर्सी से खींचकर पटक देगा।

बोलने की तो तमीज ही नहीं है इन्हें। इतनी अमर्यादित भाषा का प्रयोग किसी सभ्य व्यक्ति को शोभा देता है क्या? फिर ये तो मुख्यमंत्री हैं।

जिस जनता ने इन्हें कुर्सी पर बिठाया है उसकी समस्याएं सुनने तक के लिए इनके पास समय नहीं है। जब हम जैसे लोगों को मिलने के लिए चार चार घण्टे प्रतीक्षा करनी पड़ती है तो आम जनता का क्या हाल होता होगा ये आप समझ सकते हैं।

इनके शासनकाल में गरीबों की हालत बद से बदतर होती जा रही है।

कानून व्यवस्था की स्थिति तो ये है कि दिन में भी आम आदमी को सड़क पर चलते हुए डर लगता है। महिलाएँ, बच्चे सुरक्षित नहीं हैं।

किसान आत्महत्याएं कर रहे हैं।

शिक्षा और स्वास्थ्य विभाग तो घोटालों का अड्डा बन गए है।

और तो और चार दिन पहले वो पुल गिर गया जिस पुल का दो दिन पहले माननीय ने उद्घाटन किया था।

सड़कों की हालत इतनी खराब है कि कोई गर्भवती स्त्री इस पर चले तो अस्पताल पहुँचने से पहले ही डिलिवरी हो जाए।

एक राजनेता को मृदुभाषी होना चाहिए लेकिन इनके जैसी खुर्राट शख्सियत दूसरी नहीं है। किसी से सीधे मुँह बात ही नहीं करते।

इतनी बड़ी घटना के बाद तो इन्हें इस्तीफा देना ही चाहिए। इन्होंने लोकतंत्र का गला घोंटा है।

मैं आपके चैनल के माध्यम से कहना चाहता हूँ कि जरा सी भी गैरत बाकी है तो इस्तीफा दे दें।

तभी खबर आयी कि मुख्यमंत्री जी का देहान्त हो गया है।

एंकर ने तत्काल अत्यन्त दुखी मुखमुद्रा बना ली। आवाज को भारी कर लिया।

हमारा चैनल सबसे तेज, सबसे आगे है। हमें खुशी है कि हमारे चैनल पर ही माननीय मुख्यमंत्री जी के निधन का समाचार सबसे पहले प्रसारित हो रहा है।

वही विपक्षी नेता आँखों में आँसू भरकर चेहरा लटकाकर अत्यन्त दुःखी स्वर में

ओह

ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

आज हमारे देश ने एक महान नेता, गहन विचारक खो दिया है।

उनके जाने से भारतीय राजनीति की अपूर्णीय क्षति हुई है।

भारतीय राजनीति में एक महा शून्य निर्मित हो गया है। मैं समझता हूँ इस शून्य का भर पाना सम्भव नहीं है।